KASHMIRI SAGE

Swami Reshi Pir Sahib

Edited
BY

B. L. DHAR B. A.
Hindi (Honrs)

January 1969, 2025 Bikrimi

Price Rs. 0.80

आभारी हूं
J & K कलचरल अकदमी का जिस से प्राप्त आर्थिक सहायता से इस पुस्तक का प्रकाशन संभव हो सका

मिलने का पता

1. निरंजन नाथ बुकसेलर
हब्बा कदल श्रीनगर. कश्मीर।

रुगनाथ दर
2. सफरी यार हब्बा कदल
श्रीनगर - कश्मीर

Correction Slip

Page	Line	Incorrect	Correct	Page	Line	Incorrect	Correct
	13	आक्रमणों	आक्रमणों में	24	11	1975	1675
	3	मशहर	मशहूर	26	5	दवित्र	पवित्र
	6,10,15	4 dots	x	26	6	पूर्त	शर्त
	6	योज्य	योग्य	27	4	शात्कि	शत्कि
	5	वृद्र	वृद	27	11	प्राप्त	x
	1	लिये	लिया	27	20	खिमा	क्षमा
	3	श्रीनगप	श्रीनगर	28	2	उसके	उसने
	7	उस २	x	28	20	मांगलो	मांगलो
	16	भा	भी	29	12	व्यहारिक	व्यवहारिक
	11	तींबि	तीब्र	30	3	अशाभी	आशाभी
	18	प्रभावित	प्रभाव	30	22	एकन्त	एकान्त
	1	बन्दपाय	बन्दपाया	30	25	आतमव	आत्म
	20	समझा	समझ	30	25	ज्ञिान	ज्ञान
	23	भोडा	वोग	31	4	भजन	भोजन
	2	द्रशनों	द्रर्शनों	31	13	खटे	खेद
	16	उलको	उसको	35	1	है	हूं
	5	सस्कोर	संस्कार	36	4	भंट	भेंट
	12	अनुसर	अनुसार	36	17	गुप्तचहों	गुप्तचरों
	25	ज़मंदार	ज़मीनदार	38	11	अपरान्त	उपरान्त
	5	भांपे	भांप	41	8	उपितु	अपितु
	7	और	ओर	41	10	पुत्रवटी	पुत्रवती
	22	संतोप	संताष	45	6	तुथ्य	तथ्य
	2	करने	नकरें	45	8	तुंरूत	तुरन्त
	4	रीहत	रहित	45	24	पराकाष्टा	पराकाष्ठा पर
	4	म	में	46	2	चतावनी	चेतावनी
	10	घंटना	स्वद्दष्ट घंटना	46	12	अनिवार	अनिवारय
	12	चमत्का	चमत्कार	49	22	अलोचन किया	आलोचन की
	9	नही	x				

श्री गनेशाये नम: श्रीं गुरवे नम:

भूमिका

काशमीर पहले "कश्यपमर" नाम से पुकारा जाता था। अर्थात यह कश्यप नामक ऋषि का निवासस्थान था। यहां की जलवायु स्वंग तुल्य है। यह झीलों सरोवरों तथा उत्तम तीर्थो से भरा है। जैसे मारतंड, अन्नतनाग खीरभवानी, अमरनाथ जी, वासंकनाग, त्रिसन्ध्या, शारदाजी, महाकाली, ज्वालामुखी, चक्रेश्वर श्री महागणेष् जी इत्यादि इन पवित्र तीर्थों की कृपा से कश्यपमर उच्च कोटि के सन्तों का जन्मदाता चला आया है। जिनमें श्री लल्लेश्वरी, श्रीरुपभवानी, श्री मादव जू दर, कृष्ण जू कार, मनस राज़दान, और ऋषिपीर जैसे सन्तों के नाम मुख्य हैं। इन के कारण ही काश्मीर को ऋषिवारी भी कहते थे। इन सभी गुनों अथवा विशेषताओ के फलस्वरुप ही समय समय की विपदाओं तथा पाकिस्तान के सं० १९४७ इ० और १९६५ के आक्रमणों भी भारतीय सेना की सहायता से जनता सुरक्षित रही। केन्द्रीय सरकार रक्षा प्रबन्ध के अतिरिक्त करोडों रुपये का धन जनता के हित तथा जीवन स्तर ऊचां करने के लिए व्यय कर रही है। इस सम्बन्ध विस्तृत में वर्णन काश्मीर के इतिहास में भी आ चुका है।

यहां के सभी सन्तों का जीवन चरित्र संत माला पुस्तक में लेखक ने प्रकाशित किया है। यह पुस्तक इस समय कई सज्जनों की दृषि में आ गई है। अब यहां पर केवल स्वामी ऋषिपीर साहिब की जीवन कथा तया उसके अदभुत चमत्कार ही जनता के सन्मुख प्रस्तुत किए जाते हैं। क्योंकि आज तक पीर साहिब के वंश के किसी भी सज्जन का ध्यान इस ओर आकर्षित नहीं हुआ है।

इस पुस्तक के श्रद्धपूर्ण अध्यन से प्रत्येक नर नारी यश तथा ज्ञान के पात्र बनेगें। इसकी भूमिका काश्मीर कविता में भी दी जाती है।

—:o:—

धन्यवाद :

इस पुस्तक के बनाने में श्री बलजी वागॅनू तथा श्री बी० एल० दर ने जो सहयोग दिया है उसके लिए में उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

—:o:—

निवेदन :

यदि इस पुस्तक में किसी त्रुटि या कमी का अनुभव हुआ हो तो लेखक को सूचित करके कृतार्थ करें।

आर० एन० दर
दिलबर काश्मीरी

ओं

भूमिका काश्मीरी भाषा में

दिलस अन्दर युहय वुथ म्य खयाला,
ब वनहा पीर साँबुन पूर हाला।
कशीरे मजं यहोंय सतं द्राव मशहूर ॥
कमालात तिथ करिन गय लूक मशकूर ॥
तपस्या तिछ कठिन कंरिथ बन्योस ज्ञान ॥
मनुष्य क्या देवता आंसिस करान मान ॥
मगुंस यिम यी दिवान ओसुस ब यकदम।
तिमय कथं वारं हिन्दियस मन्ज़ म्य लेछम ॥
असिन्द हालात कंरि वरनन म्य सांरी।
यि केन्ह डयूठुम त बूज़ुम कन दांर दांरी ॥
यिथिस संतस भविन जय जय नमस्कार।
म्य दीतन यथ अगादस भवसरस तार ॥
परन यिम यथ कर्यख दीवी दया पूर।
चलयख दुख तय बन्यख सुंख बेयि अछन नूर ॥
वुछान सांहिब दिलां हरकस ब थांरी।
दया दृष्टी मंगान दिलबर बज़ांरी ॥

दिलबर काशमीरी
आर—एन—दर

पीर साहिब का शुभ जन्म

श्रीनगार स्थित बटयार में एक धनाढ़य मनुष्य गोविन्द जू नामक हो गुज़रे हैं, ससांरिक उपद्रवों के कारण वह घंर में अकेले ही रह गए थे। कई प्रत्यनों के करने पर भी वह पचास वर्ष की आयु तक कुवांरा ही रह गया था अन्त मैं एक समय वृद्ध स्त्री इसके घर पर इसी सम्बन्ध में आई गोविन्द जू ने उसका यथा योज्य सम्मान किया, नकद तथा जिन्स देकर भी उसे प्रसन्न किया। वृद्ध स्त्री ने इसका यह व्यवहार देखकर उसे यह प्रण किया कि उसका (गोविन्द जू) का विवाह सम्भव हो सकता है तथा यह आश्वासन देकर वह वहां से विदा हुई।

प्रण को पूरा करने के लिए वृद स्त्री इधर उधर प्रबन्द करते करते गुशी नामक ग्राम में पहूंच गई। वहां अपनी चतुरता से एक विधवा के घर गोविन्दजू का ब्याह निश्चित किया। अपनी सफलता से प्रसन्न होकर वह गोविन्द जू के घर आई और उसे सफलता का समाचार कह सुनाया। अब विवाह का प्रबन्ध होने लगा। निश्चित दिन पर गोविन्द जू ने दूल्हा बनकर बरातियों के समेत सोपोर की ओर प्रस्थान किया। वहां विधवा सास दूल्हा को काफी आयु का देखकर चिन्तित हो गई और सम्बन्ध कराने वाली वृद्ध स्त्री को भी जली कटी सुनाई। किन्तु अन्त में कई सज्जनों के ढारस बधाने

पर कि यह ईश्वर की करनी है। उसे राज़ी करा लिये, तथा शुभ कार्य पूर्ण किया। दोनों दुल्हा दुल्हन अब बरातियों समेत श्रीनगर लौट आए। वृद्ध स्त्री ने खूब पुरस्कार प्राप्त किया तथा गोविन्द जू के घर खुशियां मनाई जाने लगी। प्रत्येक ओर से बधाई सन्देश मिलने लगे, परन्तु दुल्हन की माता फिर भी चिन्ताग्रस्त थी। दामाद को बडो आयुध्यान में रख कर लड़की के सन्तान उत्पति की। उस २ भावना इसे विशेष कर चिन्ता में डुबाये रखती थी। इसलिए अब वह साधुओं सन्तों तथा परम तीर्थों का सहारा लेकर दौड धूप करने लगी। दैव की लीला निराली होती है। इस बारे में भी दो विचार धाराएं सुनने में आई हैं। कहते हैं कि गुशी ग्राम में एक चश्मा था लडकी की माता प्राय: वहां जाया करती थी और वहां अपनी लड़की के गर्भाधान के लिए प्रार्थना करती थी इस प्रकार कुछ समय बीतने के पश्चात उसको स्वप्न में लड़की के गर्भाधान देने का आश्वासन दिया गया।

२. यह भी कहा जाता है कि शारदा, देवी हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ है। जहाँ पर प्रत्येक वर्ष यज्ञ रचाया जाता है। विधवा माता अपनी लडकी को इसी तीर्थ पर ले गई वहां पर फिर यह आकाशवाणी होती है कि तुम्हारी लडकी को पुत्र होगा।

खैर लड़की अब गर्भवती रहती है तथा उसकी विधवा माता हर्षित होती है। वह शुभ दिन पर सामाजिक रीति अनुसार लड़की को ससुराल भेजती है। समय आ चुका था इस कारण सोपोर पहुंच कर ही उसे प्रसव पीडा हुई। परिणाम स्वरुप नाव में ही एक सुपुत्र जन्म लेता है।

सोपोर में एक मस्त योगी का प्रकट होना

सोपोर में रात के समय एक मस्ताना जोगी अकस्मात जाग पडा, तथा शिष्यों से बोला कि काश्मीर में द्वितीय सूर्य चमक उठा है, ज़रा बाहर जाकर देखो कि किसके घर सुपुत्र ने जन्म लिया है। रात काफी अन्धेरी थी। इधर उधर पूछ ताछ की गई परन्तु कुछ पता न चला अन्त में जोगी स्वंय ही बाहर निकल आया और पता चला कि नाव में किसी पण्डित स्त्री ने ऐसे लड़के को जन्म दिया है। योगी वहां गया सलाम बजा दी, सोने के दो पौंड उसने बच्चे के हाथ में उपहार के रूप में रखदिये। योगी ने बच्चे की माता को धीरज दिया तथा बच्चे का ठीक ठीक पालन करने का उपदेश दिया। योगी दर्शन करके चले गए। फिर दूसरे दिन श्रीनगर पहुंच गये। घर पहुँचने पर सब हर्षित हो गए।

किसी कवि ने इस सम्बन्ध में लिखे शब्द सत्य ही कहे है।

चूँ पिदर पीरान सरहद जवानी ताज़करद
दर सरे फरुख पिसर तारीफ बेअन्दाज करद।

बाग्य गुलशन अज़ सवा सरसबज़ शुद्ध फिरदौस वार
गशत हर सहन चमन चूं सफाए रंगीन निगार।

बूढे पिता को इस अवस्था में पुत्र की प्राप्ति से नया यौवन मिला और अपने पुत्र की प्रशंसा करने लगा उसके पुष्पों का चमन स्वंग लोक के समान हरा भरा होने लगा। उसके सहन की हर फुलवाडी फूलों से सुगन्धित हो उठी।

शुभ जन्म

आपका शुभ जन्म वैशाख पचंमी कृष्ण पक्ष १६३७ ईस्वी में हुआ। ब्राह्मण ने जन्म पत्री बनाई और फिर आपके सन्तों तुल्य चिन्ह बताये। आपका घर बधाई के शब्दों से गूँज उठा। परन्तु आपने माता का दूध पीने से इन्कार किया। माता के इस बारे में सभी प्रयत्न निष्फल हुए। इन्ही दिनों साहिब कोल नामक एक महात्मा हब्बाकदल में बिराजमान थे। माता आपको उसी के पास ले गई। और उसको सारा वृतान्त कह सुनाया। साहिब कोल ने जब आप के चिन्ह और गुण सन्तों जैसे देखे तो वह बहुत प्रसन्न हुए तथा आपकी ओर यूँ कह बैठे "जब जन्म लेने में नही शरमाये तो नोष में क्या दोष पाय यह शब्द सुनकर आपने दूध पीना शुरू किया। सभी प्रसन्न हुए और साहिब कोल ने आपके (पीर साहिब) के सम्बन्ध में निम्नलिखित भविष्यवानी की :— फारसी में

मालिके मुल्क व कज़ा व सालिके राहे कदर
जल वह आरा शुद्व चु अवतारां ब मुल्के काश्मर।

बादशहे हरदु आलम शहरयारे बहर ब बर
कदरश ता कुदरत ईश्वर बूद नज़दीक तर।

साहिब कोल का कहना है कि पीर साहिब बडे तपस्वी होकर पृथ्वी और सागर का राज्य पद प्राप्त करेगा। और उसकी मान्यता देवाताओं से कम नहीं होगी। इसको महान योगेश्वर कापद प्राप्त होगा और कशमीर में धर्म अवतार माना जायेगा।

पीर साहिब का यज्ञोपवीत तथा शिक्षा

आपकी बालावस्था आपके माता पिता के लिए अपरिमित हर्ष पृधान करती थी। वृद पिता को समझो नया यौवन मिला। नानी को जिसने काफी कष्ट सह लिए थे विशेषकर आपकी यह अवस्था नेत्रज्योति से अधिक प्रिय थी। इस प्रकार से आपका पालन पोषण बडे लाड प्यार से हुआ।

आपका जातकरण और नामकरण संस्कार बडी धूम धाम से मनाया गया, भोजन दिए गए, फिर पांच वर्ष की आयु में आपका यज्ञोपवीत संस्कार भी समाज रीति के अनुसार किया गया। धूमधाम में कोई क़सर न रखी गई। इसके बाद आपको शिक्षा प्राप्ति के लिए पाठशाला भेजा गया। वहां आप अपनी तीब बुद्धि और योग्यता से सब से बाज़ी ले गए। साथ स थ आपका मन भक्ति मार्ग की ओर भी लगा रहता था जिस कारण से आपने आगे पढने से मुःहं मोडा। कुछ समय के उपरान्त आपका पिवाह भी काफी शान सेकिया गया।

क्यों कि बचपन से ही आप त्याग मूर्ति थे और मन ईश्वर भक्ति की ओर ही लगा रहता था। आप भी अपने माता पिता के साथ हारी पर्वत का परिक्रमा के लिए जाने लगे। जो उन दिनों प्राय; वहां जाया ही करते थे। आप वहां देवी स्तुति और पूजा पाठ की तरफ अपनी श्रद्धा दूसरों से बडचड कर दिखाने लगे।

तपस्या का आरम्भ

कुछ समय इसी तरह व्यतीत हुआ। एक दिन देवी आगंन में दो भक्त श्री नान शाह और आत्मराम से आपका परिचय हुआ और वे आपके सेवक बन गए। अब से आप इन के संग ही प्रतिदिन परिक्रमा को जाने लगे और आश्रम देवी आगंन में बनाया। घर पर आपके पिताजी को घर का निर्वाह चलाने की धुन लगी थी इस कारण वह आपकी रुचि भी इसी और बढान चाहता था, परन्तु आपकी रूचि इसके विपरीत थी, आप त्याग मूर्ति थे। इसलिए पिता जी के सारे यत्न व्यर्थ ही प्रमाणित हुए, यहाँ तककि फिर वह स्वंग को सिधार गए। अब आपकी माता की परेशानी और भी बड गई किन्तु आपकी स्वतन्त्रता में और अधिकता ही आ गई। अब आप प्राय: दो सेवकों के संग देवी आगन में ही समय बिताने लगे। आपकी माता ने यह देख कर अपने भ्राता को बुला भेजा।

जब वह आपके घर आया। उसने आप का व्यवहार अच्छी तरह भांप लिया और फल स्वरूप आपको अपने गुशी ग्राम लेने पर विवश हुआ। वहां पर एक योग्य अध्यापक को आपके पढाने के लिए निश्चित किया ताकि शिक्षा जारी रहे परन्तु समझा बुझाकर भी आप पर कोई प्रभावित न हुआ। इस समयके बीच आपको एक बार मस्जिद में इस विचार से बन्द रखा गया, कि शायद आप इस तरह ससांरिक व्यवहार में सोच लेगें परन्तु निरर्थक। इधर से आपके दो सेवक आत्मराम और नानशाह आपको श्रीनगर में ढूढ़ंते रहे और अन्त में पता लगने पर गुशी ग्राम पहुचें गए। जहां उन्होंने

आपको मस्जिद में बन्दपाय। आपने उनको ताला खोलने का ढगं बताया और दरवाज़ा खोलने पर आप बाहर आए। फिर आप तीनों श्रीनगर की ओर चल पड़े। रास्ते में किसी रिश्तेदार के हां से एक भात से भरा देगचा उठाके साथ लाए। और पलहालन स्थान पर भोजन पा लिया। इस दीगचे को फिर आध्यात्मिक पूक्ति से लौटा दिया।

दूसरे दिन श्रीनगर पहुंच करदेवी आगंन में दम लिया। आपकी माता को जब यह सब मालूम हुआ तो उसने आपको घर लोटने पर विवश किया। आपने आज्ञा पालन किया, और इस प्रकार आपके दो सेवक आपसे बिछड गए फिर आपने चालीस दिन निरन्तर घुठनों के बल परिक्रमा करने की न केवल प्रतिज्ञा ही की, अपितु सफलता पूर्वक इसे पूर्ण भी किया, फल स्वरुप जगतअम्बा ने आपको दर्शन देकर कृर्ताथ किया और साथ में इस प्रकार कहा।

श्री ईश्वरी बोली ए दिल पज़ीर
बता दे ब जल्दी मुरादे ज़मीर,
तेरी इस इबादत से हुई शाद तर
अभी से हो तेरा हाल आबाद तर।

अर्थ में तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हुई इसलिए तुम अपना मनोरथ प्रकट कर आपने ससांरिक ठाठ बाठ को तुच्छ समझा कर केवल गुरू उपदेश की कृपा याचना की। यह आपकी अगाध ईश्वर भक्ति का प्रभाव है। इस पर जगत माता ने फिर यूं उतर दिया कि अच्छा! जो मनुष्य आपको पहले मिलेगा वही आपका गुरू होगा।' यह कह कर परमेश्वरी अदृश्य हो गई।

थोडी हो दूर चलकर हारी पर्वत मन्दिर के सामने कृश्णकार नामक एक मस्ताना एक चट्टान पर दिखाई दिया आपने इसकी ओर ध्यान न दिया और आगे चलते रहे, परन्तु मस्ताना ने बुलाया, और उपदेश की ओर स्मरण कराया। आपने उत्तर दिया, कि मर्यादा के अनुसार ब्राह्मण स्वरुप का उपदेश चाहिए। वास्तव में आप उसके चमत्कारों को पहचान न सके और आगे बढे, किन्तु जगत अम्बा के दरबार से उपदेश देने के लिए कृष्णकार को आदेश मिल चुका था। इसलिए कृष्णकार तुरन्त ही आपके घर पहुचें और आपकी माता से आपका हुक्का मांग लिया। चिल्लम का एक कश लगाया और आपकी माता से कहा कि पीर साहिब के सिवाय इसे और कोई पीने न पाए। यह कह कर वह चल पड़े। इतने में आप घर पहुंच गए और माता से यह प्रश्न किया कि यहां कोई आया तो नही था माता ने मस्ताने का सारा हाल कह सनाया। आप अब समझ गए कि ईश्वर की इच्छा यही है। चिल्लम के दो कश लगाए और आपको ज्ञान प्राप्त हुआ। यहाँ पर एक और विचार धारा है। कि जब आप मस्ताने के पास पहुचें तो उन्होंने परीक्षा के लिए आप से आग बनावाई और आपसे बोले कि बस्ता लाओ। बस्ता लाने पर उसने इस में से कुत्ते का बच्चा निकाला तथा उस को आग में भुनने की आपको आज्ञा दी ताकि नाश्ता किया जाए। यह आश्चर्य जनक हालात देखकर आपका दिल चकित हुआ। परन्तु विवशता के कारण चुप रहे। बडी कठिनता से जीते जानवर को आग में तैयार किया। उसके पश्चात कार साहिब ने कहा कि नाश्ता लाओ आपने आग में देखा

तो कुछ न पाया तो आप बडे आश्चर्य में पड गए। फिर कार साहिब ने कहा कि अच्छा अब बस्ता खोलो आपने जानवर (कुता) को उसी में जीवित देखा। आपके मन में मस्ताना योगी की अध्यात्मिक शक्ति का रहस्य खुल गया और उसको सरहाने लगे अब कार साहिब यहाँ से सीधे चल दिए और आपके घर पहुंच कर आपको उपदेश दिया।

तपस्या का पला दौर

इसके बाद आपने माता जी से संसार को त्यागने तथा तपस्या में जीवन बिताने की आज्ञा मांगनी चाही माता दिल के टुकडे सन्तान की जुदाई कब सहन करती है। काफी बहस हुई अन्त में निश्चित हुआ कि आप अपनी कुटिया में ही तपस्या करें। आपने रात दिन तन मन से ऐसी तपस्या आरम्भ की, कि कहा जाता है कि कई बार आग के अंगारे अपने शरीर पर डालते थे। इस तरह से शरीर में बडे घाव पड गए और कींडे उत्पन्न हुए। आपके तो सैकड़ों सेवक बन गए थे उन सेवकों ने आपके शरीर से कीडे उठाने की याचना की किन्तु आपने रोक लिया उनके हठ करने पर आपने यह उत्तर दिया कि यह सब गुरू द्रोह का दण्ड है। आपकी सेवा सेवकों के अतिरिक्त माता भी अपनी ओर से करती रही यद्यपि सेवा में कोई कमी नहीं रखते थे। कठिन तपस्या करते करते इस प्रकार 14 (साढे चौदह) वर्ष बीत गए। परन्तु आपका शरीर ज्यों का त्यों रहा और उज्जवल सूर्य की तरह चमकने लगा। आपकी मान्यता अब उच्चकोटि के सिद्धियुक्त सन्तों में होने लगी, और आपने अपना भोड़ा (चढावा) नियाज़ $14\frac{1}{2}$ पूछे

(पैसे) निश्चित रखा। सेवकों की गिनती (१२०० बारह सौं) तक पहुंच गई। लोग जोक दर जोक (स्मूह) द्रश्नों के लिए आने लगे और निश्चित चढावा भी चढाते रहे यहां तक कि साधुओं से भी चढावा लेते रहे। आपके दरबार में सब का मनोरथ पूर्ण होता था। लगातार तपस्या करने के कार्ण आपकी टागें निर्बल होचुकी थी। इसलिए सेवकों ने आपके लिए एक पालकी बनवाई थी जिस में बैठकर आप सैर को जाया करते थे।

मीशा साहिब की जन्म कथा

किश्तवाड इलाके के परगना परवली नाम के गांव में निरंजन नामक एक व्यवसायक हो गुज़रा है। इसके घर में कोई सन्तान न था वह काफी प्रभावशाली दुकानदार तथा साधु सेवक था। एक दिन उसके दुकान पर कोई साधु आया। निरजंन ने इसकी अच्छी सेवा की और अपने मनकी इच्छा भी प्रकट की। साधु महाराज इसकी सेवा से प्रसन्न हुए थे। इसलिए उसने निरजंन के प्रश्नका इस प्रकार उत्तर दिया कि यहां निकट ही एक वन में नानकशाह नामक साधु तपस्या करता है। उलको प्रसन्न करने से ही आपका मनोरथ सिद्ध हीगा। साधु सेवक निरजंन ने ऐसा ही किया जिसके परिणम स्वरुप उसको सन्तान की प्राप्ति हुई। दोनों पति पत्नी अत्यन्त प्रसन्न हुए। किन्तु दुंभाग्यवश दोनों के भाग्य में सन्तान का सुरव लिखा न था। दोनों एक दूसरे के बाद स्वर्ग वास हूए। अब यह अनाथ बच्चा नि : सहाय होकर रोटी के लिए मोहताज हो गया प्रकृति के खेल निराले। कि वही नानक शाह साधु वहां प्रकट

हुआ। उस ने बालक की दशा को देखकरइसे परवली गांव के एक जमींदार के पास रखा। अनाथ बच्चा अब जमींदार के घर में ही पाला पोसा गया।

बच्चा अब दूध पीने लगा परन्तु इसका जातिकर्म, नाम–कर्ण, सस्कोर नही किया गया क्योंकि जमींदार इसे मियांशाह जाति से सम्बन्ध रखता था वैसे जमींदार इसे मियांशाह के नाम से पुकारने लगा तथा उसको अपने बेटे की तरह पालता रहा बडते बडते लडका १५ वर्ष का हो गया और फिर जमींदारी करने लगा जमींदारी के साथ साथ लडका अध्यात्मिक कार्य भी गुप्त रीति से करता रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि नानक शाह साधु इसको उपदेश देचुका था।

जब यह नियम अनुसर अपना कार्य करता रहा, सयोंग की बात है। कि लालकार जो रैणवारी श्रीनगर का एक बड़ा व्यापारी था व्यापार के सम्बन्द में किश्तवाड (पखर्ली) इसी जमींदार से मिलने के लिए गांव में पहुंचा। क्यों कि इनका पारस्परिक व्यवसाय सम्बन्धी लेन देन भी था। गांव में चलते चलते लालाकार क्या अचम्बा देखता हैं कि एक खेत में एक कव्वा बैलों की हांक रहा थ। तथ। कुछ दूर एक युवक बैठकर अपने पुराने कपडे काट रहा था। जब इस युवक की दृष्टि जो पिंडत जी (लालाकार) पर पडी तो शीघ्र ही उठकर बैलों को हांकने लगा। लालाकार ने निकट आकर युवक से पूछा कि तुम कौन हो? कहां रहते हो उसने जमींदार का पता दिया। अब पण्डित जी भी रात को ठहरने के लिए वहां ही गए। दूसरे दिन प्रातः जब लालाकार वापिस लौटने लगा तो इस मित्र जमंदार से इसी नौकर को अपने साथ ले जाने और

अपना नौकर रखनेकी बात चीत की। उसने यह सब मान लिया क्योंकि वास्तव में ज़मींदार नौकर (मीशा साहब) के गुणों से अपरिचित था। अत: लालाकार इस सेवक को साथ लेकर श्रीनगर की ओर चल पड़ा! लालाकार चूंकि रहस्य को भांपे गया था। इस लिए कुछ दूर चल कर वह घोडे से उतरा और मीशा साहिब को चढने के लिए कहा। उसने न माना। लालाकार ने उसको सच्चाई की ओर सकेंत किया और फिर दोनों पैदल ही चल पडे। श्रीनगर पहुंच कर मीशा साहिब को धर में तपस्या के लिए अलग एक कमरा दिया और इस प्रकार दोनों में प्रेम बढ़ता गया। घर में ही ठहरे रहने के कारण ही उसके हालात लोगों के सामने नहीं आए अपितु क्रशनकार साहिब के जीवन काल में यह अति प्रसिद्ध हुआ

कृष्णकार की जन्म कथा

चूकि मीशा साहिब दिन रात अपनी तपस्या में लीन रहते थे। लालाकार और उसकी पत्नी इनकी सेवा बराबर करते रहे। लालाकार कापुत्र न था इस प्रकार एक दिन उन्होंने अपनी यह इच्छा मीशा साहिब के सामने प्रकट ही की। वह तो पति पत्नी की सेवा से प्रसन्न हुए थे इस कारण से उसने इनकी प्रार्थना स्वीकार की और लालाकार के घर में एक सुपुत्र ने जन्म लिया माता पिता काफी हर्षित हुए तथा बेटेका नाम क्रष्णकार रखा। कुछ देर के पश्चात लालाकार स्वर्गवास हो गए। इस शोक पर उनकी पत्नी मीशा साहिब से संतोप प्रकट करने लगी। कि उनका लड़का बिना यज्ञोपवीत है। इसलिए वह अपने पिता के क्रिया कर्म करने के योग्य नहीं था। आपके जीवन काल में ऐसा होना ठीक

भी नहीं है। यह सब सुनकर मीशा साहिब बोले। अच्छा अभी उनका संस्कार करने घर में तो अशन्ति मच गई थी। फिर मीशा ने थोडा पानी शरीर पर छिडक दिया और वह पुन: जीतव हुए। सारे परिवार में सीमा रीहत प्रसन्ता हुई ओर मीशा साहिब की प्रशंसा होने लगी ।। लालकार फिर २० वर्ष तक ज़ीवित रहा इस समय के बीच कृष्णकार का यज्ञोपवीत और विवाह संस्कार आदि किया गया। कृष्णकार मीशा साहिब का शिष्य बन गया और गुरु भी बहुत प्रेम तथा स्नेह से शिष्य की देख भाल करता रहता था। आखिर में निश्चित समय पर लालाकार का देहान्त हो गया। इसके बाद मीशा साहिब नदी के किनारे पर तपस्या करने लगा। लोग दर्शनों केलिए आने लगे। एक दिन सामान से भरी हुई एक किश्ती शालमार से गुजर रही थी और वहां पहूंचकर शीघ्र ही रुक गई। हांजी बहुत ज़ोर से खींचते रहे परन्तु कुछ फल न हुआ अन्त में वे सन्त मीशा साहब से विनती करने लगे तो आपने कहा कि बोलो। मीशा पादशाह यह कहते ही नौका निकल पडी। अब साधारण लोगों को भी इसकी फकीरी का सही परिचय होने लगा। मीशा साबि आध्यात्मिक शत्कि से पूर्ण थे। इसका प्रमाण कृष्णकार साहिब के हालात से मिलते है। इनके बाद यह उच्च कोटि के सन्त प्रकट हुए। मीशा साहिब के बाद मुहल्ले का नाम मीशा मह-ला पड गया उनकी समाधि पर एक मस्जिद बनाई गई जहां प्रत्येक वर्ष मेला लगता है यहां सब हिन्दु मुसलिम दोनों श्रद्धाजली भेंट करते है। कृष्णकार साहिब मस्ताना ढंग से रमण किया करते थे प्राय: हारी पर्वत देवी के चरणों में परिक्रमा करते थे। आप कवि भी थे श्री शरिका भगवती की अस्तुति आपने फारसी भाषा में ऐसे की है कि यह जीती जागती तस्वीर

प्रतीत होती है। जिसको पढ कर भक्ति और ज्ञान प्राप्त होता है। परन्तु आजकल फारसी जानने वाले बहुत कम हैं। फिर भी कुछ पधांश नीचे प्रस्तुत किएजाते हैं।

श्री कृशणकार की फारसी कविता, म स्तोती —

बन्दे शिलातन इश्वरी श्रीशारिका देवी नम: मेहरे चरीचर इश्वरी श्रीशारिका देवी नम: नूरे जहांने सुन्दरी ता बन्दह मेहरे अनवरी: माहे फरोज़ा अखतरी श्री शारिका देवी नम: देवी जगत माता तुई शिव शिक्त गुरु दाता तुई माता पिता भ्राता तुई श्री शारिकादेवी नम। ज़ाहिर तुई बातिन तुई हाजिर तुई नाज़िर तुई अवल तुई आखिर तुई श्री शारिका देवी नम: अज़ हर ह कारन बरतरी दर हर दु आलम सरवरी बर फर्क अन्द्र अफसरी श्री शारिका देवी नम: जग रा सरो सामान तुई शाहे शाहंशाहाँ तुई जिस मे जहांरा जां दिहीं श्री शारिका देवी नम: लक्षमी जहां आराइतू मायाइ विशान अफजा तुई बुध्यी महा विध्या तुई श्री शारिका देवी नम: गर्दे रहत किलते बशर खाके ज़रत नूरे कमर संग स्मेरत खिश्ति जर श्री शारिका देवी नम: तू चारदह रत्ने गरां तू नौ निदाने बेकारां तू कानि गोहर शुद अयां श्री शारिका देवी नम: ही इशट देवे शारिका दासे तु केहत्र कृशण कार गोयद तुता जोयद दया श्री शारिका देवी नम:॥ आप उच्चिकोटि के साधु थे और लोग आप को काफी आदर सतकार करते थे। ऋषि पीर साहिब के आप गुरू महाराज भी ठहरे हैं। जिसका संक्षिप्त वर्णन पहले किया गया है। हैरानी की बात है कि किसी सज्जन ने आजतक आपका जीवन चरित्र नहीं लिखा है। इसी लिए आपके हालात लोगों के नजरों से ओझल हैं। आपका और

आपके गुरूदेव का आश्रम आप के ही मकान में था जो अभी तक मौजूद है। मकान के चारों ओर बाग भी है। साडे तीन सौ वर्ष लगातार मकान प्रयोग में लाने पर भी प्राकृतिक परिवर्तनों का इस पर कोई प्रबाव नहीं पडा है। इसी मकान के एक कमरे में आप का और पीर साहिब का दस्ती चित्र मौजूद हैं। आप नगें शरीर कन्दों पर जलता हुआ अग्नि बाण्ड रखते थे। दुख की बात है आप के पुत्र या सेवकों ने आपका दिवस मनाने का कोई दिन नियुकत नहीं किया है। जिस प्रकार दूसरे महर्षियों का दिवस मनाया जाता है। यह लेखक के १९६० ईसवी की घंटना है। आपके वंश में इस समय श्री गोपी नाथ कार, दामूदर इतियादि मौजूद है। आप को मेरा नमस्कार है।

"पीर साहब के चमत्कार"

यों तो आपके चमत्का अनगिन्त हैं। फिर भी इश्वर भत्कि और श्रद्धा बडाने के लिए कुछ चमत्कारों का वर्णन यहाँ पर किया जाता है॥

रिहान्द का जन्म (पुत्र)

यद्यपि आप गृहरूपी थे। परन्तू आप संसारिक झंझटों तथा बन्धनों से मुत्क थे। एक दिन आपको माता जी अपनी वृदावस्था और असामंमर्श्य की चंचा कर रही थी और इस कारण से आपके हां सन्तान होने की चर्चा आवपूयत्का प्रकट करने लगी। आपने उत्तर दिया कि एक त्यागी को सन्तान की क्या अवश्यकता है। यह सब चीज़ें तपस्या में बाधा डालती हैं। इस वाद विवाद के दौरान में

ही आपके गुरु श्री कृशणजूकार साहिब वहां पहुंच गए। वह साहस और दृडता देखकर प्रसन्न हुए। किन्तु आपके माता के मन का अभि प्राय समझ कर वे बोले कि माता पिता की आज्ञा मानना बेटे का कर्तव्य है गुरू के इन शब्दों पर आपने फिर माता जी की आज्ञा मान कर उनकी इच्छा की स्वी कृति प्रकट की। माता जी अत्यन्त प्रसन्न हुई थोडी देरके पश्चात कार साहिब चल पडे।

कुछ समय पश्चात शुभ दिन पर माता जी ने अपनी भहू को पवित्रता के साथ आपके कमरे में जाने की आ ज्ञा दी। आपकी पत्नी साथ अपने को सरहाने लगी अन्धेरी रात थी कमरे में पहुंच कर वह क्या अचम्बा देखती है। कि आपका कमरा अध्यात्कि प्रकाश से चमक रहा था और आपके शरीर के अंग सभी ढीले हो गए हैं और इसतरह कई दृश्य सामने आए। इन भयानक दृश्यों से उसका दिल (पत्नी का) भय भीत होगया। वह यह सहन न करके भाग निकली और दिल में कई तरह के विचार आने लगे तथा अपने को दोषी ठहरानेलगी। परन्तु आप उसके विचारों से अपीरचित नहीं थे। सारी रात इसी चिन्ता में बीत गई। अपने समय पर प्राय : उठ खडे हुए और अपनी पत्नी को पुकारने लगे। ज्यूं ही उसने आपको स्वस्थ अवस्था में देखा त्यूंही उसका दिल ठिकाने लगा और प्रसन्न हुई। आपने उसी समय उसे पुत्रवती होने का वरदान दिया। वह आपके इस भेद की प्रकट न कर सकी। दूसरे दिन प्रात : जब माता जी ने ऐसे पूछा कि आपके कमरे में रात को कौन था तो आपने उत्तर दिया कि बिना धर्मपत्नी के और कोई न था। आगे निश्चत समय के बाद सन्तान ने जन्म लिया। आपकी माता अति हर्षित हुई। रीति अनुसार उसका नाम कर्ण किया

और उसका नाम रिहानन्द रखा गया। परन्तु दूर्भाग्य से बच्चे की माँ स्वर्गवास होगई। फिर आप ने बच्चे कों पालने के लिये एक मुसलमान के घर दाछी गाम भेजा शायद वह आप का सेवक था वहां वह १६ वर्ष तक पाला गया ॥

२. आपकी माता ने गंगा अष्टमी पर गंगा जी जाने की इच्छा प्रकट की आपने उत्तर दिया कि तुम इस वृद्धावस्था में जा नहीं सकती अतः यदि विश्वास हो तो में गंगा जी को यहां आने की प्रर्थना करूँगा। किन्तु माता जी को पूर्ण विश्वास नहीं हुआ। फिर आपने यह सुझाव दिया कि हमारे पुरोहित गंगा जी जारहे है। इस लिए कोई विशेष वस्तु गंगाजल में डालने के लिए उनके हाथ दे देगें। माताजी ने यह बात मानली। फिर अपना एक सोने का कड़ा उस के हाथ में देदिया अष्टमी के दिन जब गंगा स्नान का समय आ पुहंचा तो आपने माता जी से वितस्ता नदी बटयार घाट पर स्नान करने को कहा। वहाँ। वह फिर कई नारियों के साथ चल पडी और पानी में उतरी तो पानी से एक हाथ प्रकट हुआं जिस में वह सोने का कडा था माताजी ने कडे को हाथ में ले लिया। स्नान करके घर आई सब नर नारी अत्यन्त प्रसन्न हुए और आपकी सराहना की।

आप के माता जी का देहान्त

३. कुछ समय के बाद आपकी माता बीमार पडी और परि लोक सिधार गई। आपने माता जीं की जुदाई काफी महसूस की। वह कठिनाइयां याद आई जो उसने आप को पालने में उठाई थी। इस लिए माता की स्वर्ग प्राप्ति के लिए १४½ वर्ष की तपस्या का फल अपर्न किया। फिर भी मर्यादा को रखने के लिए उसका क्रिया कर्म किया। उसके दसवें दिन पर आप

के गुरू महाराज भीं आगये। उन्होंने आपसे कहा कि चौदह वर्ष का फल तो अर्पण कर चुके ही अब और तपस्या करनी पडेगी नही तो खाली हाथ रहोगे। इस पर आपने फिर १४ वर्ष तपस्या करनी आरम्भ की ॥

तपस्या का दूसरा दौर।

आपने फिर एसी कठिन तपस्या की कि खाना पीना भी छोड दिया और केवल दूध और पानी पर ही सन्तोष किया जिस के कारण आप का शरीर दुर्बल हो गया। टागें तथा पांव चलने फिरने के योग्य नहीं रहे। फल स्वरुप मनुष्य क्या देवता भी चकित हुए। जब चौदह वर्ष समाप्र हुए तो गुरू देव प्रकट हुए। आपकी प्रशंसा की और अति प्रसन्न हुए। स्वयं आपको नए कपड़े पहनाकर गद्दी (सिंहासन पर विठाया उसी दिन से आप परि पण्डित पादशाह के नाम से प्रसिद्ध हुए और बडी २ करामाते करने लगे और सेण्कडों सेवक बन गए ॥

पुत्र रिहान्द का यज्ञोपवीत संस्कार

४. कुछ समय के पश्चात एक दिन यज्ञोपवीत धारण करके एक बालक भेठं (नियाज़) लेकर आपके पास आया। इसको देखकर आपको अपने सन्तान की याद आई। तथा उसके यज्ञोपवीत संस्कार का विचार आया। शीघ्र ही आपने सेवक नानशाह को बताया और अपने पुत्र रिहान्द को दाछो ग्राम से लाने की आज्ञादी। उसने दाछी ग्राम से लाकर बालक को उपस्थित किया। अब यज्ञोपवीत संस्कार का प्रबन्ध आरम्भ होनेलगा। किन्तु कुछ ब्राहमन देवताओं ने इस बालक का मुसलमान घर में पालन होने के कारण अप्रसन्नता प्रकट की।

इस अलोचना को सुनकर आपने नानशाह को आदेश दिया कि इस लड़के के पीठ पर तीनबार छडी से खरम लगा दो। आज्ञा अनुसार सेवक ने एसा किया तो बालक के शरीर के तीनभाग भिन्न भिन्न हुए। फिर आपने आज्ञादी कि इन भागों को वितस्ता नदी में फेंक जाओ फिर बालक को नाम से पुकारो। नानशाह ने एसा ही किया तो क्या हुआ। बालक वास्तविक रुप में पुनः प्रकट हुआ। फिर नए कपडे पहनाकर आपके सामने उपस्थित किया गया। पिता ने पुत्र का मुख चूमलिया और उस का चेहरा चन्द्रमा जैसा मुखडा बन गया। उस के बाद अलोचक ब्रहमणों से फिर पूछा कि क्या रिहानन्द यज्ञोपवीत संस्कार के योग्य हो गया। सारे लोग जब आपकी आत्मशक्ति को देखकर दगं रह गऐ। और ब्राहमण लज्जित हुए। बाद में धर्म पूर्वक और कुल रीति से रिहानन्द का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया प्रेत्यक व्यत्कि को प्रशाद बाटां गया और दान भी दिया गया।

पुत्र रिहानन्द की शिक्षा व विवाह

चूंकि रिहानन्द को दाछी—ग्रॉव में शिक्षा प्रोप्त हो न सकी इस लिए शुभ मुहूर्त पर इसका विधा आरम्भ किया गया थोडे वर्षों में ही उसने बिधा प्राप्त की और उस के उपरान्त उसके विवाह के बारे में विचार होने लगा। एक दिन कोई अच्छे परिवार का एक सज्जन आपके पास उपस्थित हुआ। और आपनी बेटी के विवाह कराने के सम्बन्ध में प्रार्थना की। उस ने साथ ही अपनी गरीबी तथा दींन दशा का वर्णन किया। उसकी यह दशा सामाजिक कुरीतियों से हुई थी। इन हालात को सुनकर आपने उसे तसली दी। और कहा

कि यदि मतुमेरे बटे के साथ नाता जोडने में कोई बुराई न समजोगे तो तुम समाज की बुरी रीतियों तथा अधिक व्यय करने से मुत्क होजाओगे। पण्डित जी ने इस पर अपनी स्वीकृति के साथ धन्यवाद भी किया। अब शुभ कार्य का प्रबन्ध होने लगा। निश्चित दिन पर बरात धूम धाम से निकली और बरात में दो हज़ार बराती लिए गये। लड़की वाले के घर जब बरात पहुच गई तो बरातियों की गिन्ती को देख कर लड़की का पिता घबरा गया और कही छिपा बैठा। आपसे यह सब कुछ छिपा तो न था। नही इसलिए आप ने लडकी वाले को बुलाकर तसली दी और यह उपदेश दिया कि रसोई बर्तन ढ़कने के बिना रहने न पाए। और सभी वरातथियों को भोजन देने से पहले मेरे लिऐ भोजन भेज दिया जाये आप की आज्ञानुसार लडकी वाले ने एसा ही किया। सारे बराती प्रसन्न होकर भोजन खा चुके परन्तु फिर भी कई बरतन खाने से भरे पडे रहे। लड़की वाले को यह देख कर बडा आशचर्य और प्रसन्नता हुई। लगन कार्य भी सिद्ध हुआ और अन्त में सभी बरातियों समेत आप घर लौट आए और बाजे बजने लगे।

आग की घटना

आपने शिष्यों अथवा मातुकर्द् के लिऐ 14 पैंसे काजो चढावा (नियाज) नियुक किया था। वह कई लोगों का बोझ मालूम होने लगा। कई श्ष्यिों (Trustees) को यह देना मूल भी गया। लापरवाई यहां तक हुई कि कई लोगों ने चढावा के बदले अफीम के गोले दिये। जिस के खाने से आप को गंमी पैदा हुई। किसी सज्जन ने दूध का प्याला दिया। लोगों के इस अनाद रका परिणाम यह निकला कि अचानक शाहर

में आग लग गई। आलीकदल ज़ैनाकदल, बोहही कदल और जमिया मसजिद तक करीबन दो हज़ार मकान राख हो गए। इन मकानों में केवल उसी का मकान बचा रहा जिसने आप को दूध पिलाया था। जब आग फैलती गई तो कई लोग आप के पास आकर विनती करने लगे और यूँ प्रार्थना करने लगे कि आप कुछ साहयता करें क्योंकि आप का नाम मुश्किल आसान पड गया है। अन्त में आप ने अपनी खड़ाऊं का एक पांव देकर इसको अग्नि में डालने की आज्ञा दी। लोगों ने आदेश का पालन किया और अग्नि शान्त हो गई। चमत्कार को देख कर लोगों में आपका काफी विश्वास और प्रेम बढने लगा। यह घटना 1975 बिक्रमी में हुई जब कश्मीर का गवर्नर इफतियार खां था इस का वर्णन काश्मीर के इतिहास में भी आचुका है ॥

" नाव की यात्रा

एक दिन आप शिष्यों के साथ नाव में बैठकर नूर बाग की ओर सैर को चले गए। एक सप्ताह के बाद आप के आश्रम की ओर लोटते समय एक शिष्य नींद में मस्त सोने के कारण नाव में न आ सका न दूसरे शिष्यों को उस का ध्यान रहा। जब वह शिष्य जाग पडा और अपने को अकेले पाया उस ने नदी पार करने के लिए नाव की तलाश की परन्तु वहां पर कोई नाव न पासका। फिर क्या होता है कि शाहि नूरबाग अपने प्रयोजन पूर्त (मारने) के लिए मल्लाहा बन कर इस शिष्य के पास नाव लेकर आया। नाव में उत्तरते समय शिष्य ने आपका नाम लिया। यह सुन कर शहिनूर बाग सहम सा गया और अपने प्रयोजन को हल करने में

असमर्थ रहा। इतना ही नही अपितु आप के मान के लिए नाव को पार पहुचाया। आपके शिष्य को आश्रम तक पहुचाने का भी प्रबन्ध करने लगा। इतने में आप के दूसरे शिष्यों ने जोइसकी खोज में निकले थे शाहिनूर बाग को शिष्य के साथ आते देख लिया। शिष्य ने शाहिनूर बाग को विदा किया और दूसरे शिष्यों के साथ वापिस आया। सेवक आपकी इस शक्ति को देखकर चकित रहे।

'एक मुस्लमान व्यापारी को तूफान से आजादी'

एक मुस्लमान व्यापारी अपना माल नाव द्वारा श्रीनगर ला रहा था चलते २ नदी में अचानक तूफान आया और नाव डूबने लगी। व्यापारी काफी निराश हुआ था। इस कठिन समय में वह प्रत्येक सन्त और फकीर का नाम लेने लगा और चढावा देने का वचन भी देता रहा परन्तु कोई सहायता न कर सका। अन्त में आप का नाम भी लिया। तथा भेटं चढाने का मन में ही वचन दिया। स्मरण करने पर ही तूफान रूक गया और नाव चल पडी। इसके बाद कुछ समय तक व्यापारी भेटं चढाना भूल गया। आखिर कुछ देर बाद उसे स्मर्ण कराया गया। फिर वह आप के पास आकर क्षमा याचना करने लगा। और वचन भी पूरा किया। आगे चल कर वह अन्य शिष्यों की तरह आपकी सेवा करने लगा।

'जहूरद्धीन नामक एक मुस्लमान के लडकी को सन्तान प्राप्त

स्त्री जाति को प्राय बच्चों की प्रीति होती है इस की एक उदाहरण यह भी हैं।

सफाकदल के ज़हूरद्दीन नामक एक मूसलमान की लड्की विवाहित थी। काफी समय तक उस को कोई सन्तान न हुआ जियारतों और फकीरों के पास जाकर भी मनोरथ सिद्ध न कर सकी। अन्त में आपके पास आकर साविनय अपनी मनोकामना प्रकट की। क्योंकि वह वास्तव में नेक और दवित्र थी। आपने उसका डारस बन्धाया और यह पूर्त रख दी कि यदि आप अपने सारे आभूषन वितस्ता नदी में फेंक देंगी तो सन्तान प्राप्त होगा। उसने आज्ञा सवीकार की। घर पहुंचकर ऐसा ही किया आखिर में वह पुत्रवती हुई। परन्तु बालक एक आंख से काना था। अब वह पछताती, रोती आपके पास आई और कहने लगी कि आपने दया अवश्य की लेकिन अपूर्ण। आपने उत्तर दिया कि तुमने मूल्यवान वस्तु को सन्तान से अधिक प्रिय समझा इस लिए खुदा (भगवान) ने भी एक आंख की रोशनी न दी क्योंकि यह न समझो कि घर में छिपाने से वह न देखता है। इसपर उसने आपसे सविनय क्षमा की प्रार्थना की। फिर आप ने कहा कि जब तुम उसी छिपाये हुए आभूषन को नदो में अर्पन करोगी तो तब ही बालक के नेत्र को रोशनी अए गो। वह फूले न समाई तो इस बात की काफी प्रशंसा हुई। और आपका आदर बडने लगा।

" बाजार की सैर "

एक दिन आप पालकी में सवार होकर कई शिष्यों के साथ बाज़ार की सैर को निकले। उसी दिन गर्वनर काशमीर सैफखान का एक मस्त हाथी आपे से बाहिर हो गया था और बाज़ार में काफी शोर मचा हुआ था जब आपके कहारों

(पालकी उठानेबाले) ने भी इस हाथी को देखा तो भयभीत होने के कारण उन्होंने आपकी पालकी सडक पर ही रखली और स्वयं भाग निकले। उन को इस अवसर पर आपका संत भाव और अध्यातिमक शातिक भूल गई। अन्तमें जब यह पागल हाथी आप के पास आ पहुंचा तो वह अपना सिर झुकाकर सामने ठहर गया आपने उस के सूड पर अपना हाथ फेर लिया और हाथी के होश ठिकाने लग गए। जब महावन ने यह सब देखा तो वह आश्चर्य चकित रह गया। फिर वह समाचार गवर्नर तक भी पहुंचता हैं। वह प्रस्न होकर स्वयं भेंट चढाने के लिए उपस्थित होता है। उसने आपकी आध्यात्मिक शक्ति की काफी प्रश्सां प्राप्त करके लौट चला।

श्री रूप भवानी से दरशन होना

आपके जीवन काल में श्री माधव जू दर जो एक महान साधु थे उसके घर में रुपभवानी का जन्म हुआ था। इस की कथा सन्तमाला में आचुकी है। एक बार वह आपके आश्रम पर आई। आप उस समय (श्री पचंमो) के काम में लीन थे साथ हो माया भी प्रबल होतीं है उसे पहचान न सके और उसे भी यथा रीती चावल के फूल दिए इस पर श्री रुपभवानी ने कहा (आखिर द्राक लाय गरु) चावल के फूल बेच ने वाला यह कशमीरी भाशा का शब्द है। कुछ वादबिवाद भी हुआ। अन्त में आपसम्झ गऐ फिर खिमा मांगी।। फिर वह सेवकों समेत बिदा हुई॥

मुल्लाह आखून शाह का वृतात

मूल्लां अखून शाह नामक एक जादूगर उन दिनों हारी पर्वत के दक्षिन में रहता था जो कि प्राय: साधु वेष ही

धारण करता था उस के मकान के खण्डरात अब भी मौजूद है, उसकी जादूगरी में बहुत बडे कमालात थे उसके निवास स्थान के नज़दीक एक तलाब बनाया था जिसे आबिज़ुलाल कहते थे। इस जल में ऐसा प्रभाव था कि वह कोई कठिन से कठिन कार्य आसान बनाता था। लोग इस की जादूगरी से अपरिचित थे। कहा जाता है किवह इस जादूगरी केवल से पंजाब के एक धना डय सेठ की सुन्दर लडकी को प्रतिरात्री यहां अपने मकान में अपना मुहं काला करने के लिए लाता था ।। कई महीने इसी तरह गुज़र गए। यह बात किसी तरह प्रकट न हुई। कुछ समय के बाद जब लड़की गर्भवती हो गई। किन्तु बालिका कुएँवारी थी। उसकी मातापिता को बहुत चिन्ता हुई और विवश होकर लडकी से पूछ ताछ की। पहले वह लजा के कार्ण चुप रही। किन्तु माता पिता के आग्रह करने पर उसने सारा वृतान्ता कह सुनाया ।। माता पिता और सम्बन्धी आश्चर्य में पडगए। करें तो क्या करें? निःसहाय थे। उनहों ने लडकी से पूछा क्या उस देश या स्थान का कुछ पत्ता है जहां वह तुझे रात को लेजाया करता है। परन्तु उस बिचारी को कुछ ज्ञात न था। अनधेरी रात में उसको कुछ पत्ता न चलता था। इस पर माता पिता ने कहा कितुम उस स्थान का विशेष फल या वस्तु मांगली। दूसरे दिन वह अपने साथ बादाम वृक्ष की एक टहनी फल सहित लेआई। सो विचार करने पर यह अनुमान लगाया गया। कि यह काश्मीर का फल है। उसके बाद उनहोंने देहल्ली के महाराजा औरगंज़ेब तक यह समाचार पुहंचाया। वह इसलामी धर्म पर पका था उसको इस बात पर क्रोध

आया। उसने एक दम गवर्नर कशमीर की आदेश भेजा कि वह सभी जादूगरों को देहल्ली भेज दे। सैफ खान यहां का गवरनर था वह इस के खोज में लग गया। उस समय आप के सिवाय और कोई प्रसिद्ध सामर्थ वाला संत नहीं था। उसने संत और जादूगर की पहचान न करके आप को ही देहल्ली भेज दिया इस बीच में मुलाह आखून शाह ने आप को निमन्त्रन भी दिया।

आप को आखूनशाह का निमन्त्रन

आखून शाह को आपकी दिव्य शक्ति और चमत्कारों का कान्टा खटकता था। उस के मन में वैर भाव उत्पन हुआ था उस के अतिरिक्त वह आपके गुणें से पराजित भी हुआ था जिस का उसे ईदगाह के मैदान में महात्माओं की सभाओं में व्यहारिक अनुभव हुआथा।। ईदगाह में यह सभा प्राय: लगती थी जिस में आखून शाह भी उपस्थित होताथा। परन्तु सबलोगों में आप की अध्यात्म शक्ति उच्ची थी। इन कारणों से आखून शाह आपसे बदला लेना चाहता था। इस प्रकार एक दिन उसने आपको निमन्त्रन दिया क्यों कि आप किसी के निमन्त्रन को ठुकराते नही थे इस लिए आपने उसका निमन्त्रम स्वीकार किया परन्तु निम्नलिखित शर्तों पर।। १ निमन्त्रन में प्रयोग होने वाले वस्तुऐं सफाई शद्धता और पवित्रत से त्यौर कीजाएं। २. प्रत्येक वस्तु सम्पूर्ण होनी चाहिएं और झूठा न कीजाएं भेड. मुरगे आलू इत्यादि......इन के सभी अॅग मौजूद हूं ३. १२५० मूर्तियों के लिए भोजन बनाना चाहिए। ४. एक ही समय पर सभी थालियां ढकनों समेत सभी मूतियों के सामने रखी जानी चाहिएं।।

यह सब शर्तें मुलाह आखून शाह ने बडे अभिमान के साथ स्वीकार की साथ ही १२५० हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन कराने की अशाभी मन में ठहरगई। प्रबन्ध अनुसार उस ने एक बडा हाल सजाया और सभी पदार्थों को तैयार किया निश्चित समय पर जब आप शिष्यों समेत पधारे तो आखून शाह ने पहले फारसी भाषा में इन शब्दों में आपका स्वागत किया।

मल आंखूनशाह ने फारसी कविता में कहा —
इमरोज शाहि शाहां मेहमान शुध्न अस्त मारा ज़बरील ब मलाइख दूरबां शुद अस्त मारा।
अर्थ — आज राजाधि राज मेरे अतिथि हुए हैं और महाकाल अपने आधीन देवताओं के समेत आपके सण्तरी बनेहैं।।
आपने भी फारसी कविता में उत्तर दिया
दरबार गाहि वहदत कसरत चिकार आयद हशत दह हजार आलम यंकता शुध्द अस्त मारा। दर खलवते गद्दायां मज़िल कुजा ब गुलजार बेबज़्म वे नवाई सामान शुध्द अस्त मारा। बुतखानए जहां रा विस्यारसैर करदम। आईनि खुद परस्ती ईमां शुब्द अस्त मारा।
अर्थ — इस संसारके बड़े फैलाव में भगवान का चमत्कार एक ही है। इसी तरह मेरे पास अठारह हज़ार भवन एक समान है। संसार से न्यारे ईश्वर के प्यारे भक्तों कोफुलवडियों से क्या प्रयोज़न है। एकन्त और वैरागी ही मेरी जीवन सामगरी बनी है। में संसार के सारे तीर्थो, शिवालों तथा ज़ियारतगाहूं की सैर कर चुका हू अन्त में अपने शरीर के भीतर ही आतमव ज्ञान का चार आया। वही उस के मिलने का कार्ण बना ।।

आपके ज्ञान वाक्य सुनकर अखून शाह प्रसन्न हुआ। आदेश अनुसार खान ढ़कनों समेत चादरों पर लाया गया। आपके शिष्यो में शंका के कारण काना फूसी होने लगी कि क्या पोर साहिब यह भजन ग्रहन करेंगे। आपकी आत्मशक्ति तो परा-काष्टा पर पहुंच चुकी थी। पहले तो आपने वही आविजुलात मंगवाया और उसे प्रभाव रहित कर दिया। उस के बाद एक चलू भर पानी उठाकर सभी भोजन से भरे हुए बर्तनों पर छिडक दिया। फल स्वरूप ऐसा चमत्कार हुआ कि सारे पर्दाथ वास्तविक रूप में आगए मुर्ग और भेड जीवित होकर चलने लगे। केवल एक मुर्ग एक टांग से लगंड़ा रहा मुर्ग की टांग एक कम होने पर आपने क्रोध से बोला कि इसकी दूसरी टांग तुरंत सामने लओ वरना अपनी टांग आपको देनी होगी। खटे यह है कि कोई अभागय रसोइया इस टांग को चख चुका था मुला ओखून शाह लज्जित हुआ। रसोइया को दरबार में उपस्थित किया और हाथ जोड कर क्षमा याचना करने लगा। आप ने दयालु होने के कारण उसको माफ किया और मुर्ग की टांग ठीक हो गई।

अन्त में आखून शाह से कहा कि यह पकवान झूठा होने के कारण अस्वीकार हुआ सारे निमन्त्रित व्यक्ति आश्चंय में पड गए और शीष झुकाया। फिर सभी आश्रम की ओर लोटे। इस चमत्कार का चंचा श्रीनगर तथा कशमीर के अन्य भागों में होने लगी।

औरंगजेब की और से देहली आने की आज्ञा

क्योंकि गर्वनर कशमीर कुछ समय तक जादूगरों की तलाश में था। कुछ प्रतिष्ठित पुरषों के कारण आखूनशाह

की जादूगरी का रहस्य गर्वनर के ध्यान में नही आया। अपितु आपके सम्बन्द में ही शंका प्रकट की गई। अत: गर्वनर ने आप का नाम अपने पत्र के समेत दहेली भेज दिया था पत्र का विषय फारसी कविता में इस प्रकार लिखा गया था।

मुखतसर पत्र गवरनर काशमीर महाराज औरगंज़ब के नाम :—

सेफखांन बिनवीसत शाहेहन्द रा कि ए शिहरयार -
हसत दर काशसीर हिन्दोंए कस जईफ व नज़ार।
दस्त व पायश नेस्त तखतश अफसरां बर सर बिरुन्द।
सरवरां दर सजदह अश शामो सहर बरदरंद।
ज़ेरि फ़ुरमानश हमह मुलक व मलक जिनव परी।
बावजोदे नातुवानी बरहमह कस बरतरी ।।
सजा उंगुशतर कुनानीद अस्त खुदरा बादशाह।
बादशाहा नह मुहर हर अतराफ गर्दद बाजखाह ।।

अर्थ :— यहां एक हिन्दु है जिसके हाथ पैर बेकार हुए हैं। परन्तु उसे एक पालकी में उठा कर सैर कराया जाता है। उच्चि कोटी के लोग तथा गरीब सायम प्रतः बडे आदर के साथ इसके सामने शीश नवाते हैं। सारे देवताओं, परियों और लोगों में इसकी आज्ञा का पालन होता है शारीरिक निर्बलता होने पर भी उससे सर्वश्रेष्ट माना जाता हैं। हाथ में अगॅूठी है। शासकीय दंग से उसकी मुहर लगा कर आदेश जारी करना है। और भेटं भी लेता है। जब औरंगज़ेब ने यह पत्र पढ लिया। तो उस ने अपनी ओर से दो सेवक गवर्नर काशमीर के पास भेज दिए और उनको आदेश दिया कि ऐसे जादू - गर संत को देहली भेज दिया जाये। इस प्रकार जब यद सेवक कशमीर पहुंच कर आपके पास राजा की आज्ञा

लेकर आए तो अपनी दुर्बलता के कारण आज्ञा पालने में असमर्थता प्रकट की किन्तु सेवक आज्ञा भंग नही कर सकते थे वे वहाँ ले जाने के हठ पर स्थिर रहे इस पर आपने एक रात का अवकाश मांगा। फिर क्या हुआ। कि उसी रात आपने आत्मशक्ति से एक गर्जता हुआ सिंह उपस्थित किया। आप उस पर सवार होकर उसी रात एक घण्टे के अन्दर देहल्ली पहुँच गये। औरगज़ेब के दरबार के बाहिर कडा पहरा लगा था। सिंह ने एक छलांग मार कर महल में प्रवेश किया और फिर राजा के होश उड गये और आपसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि हे महाराज आपकौन हैं और कैसे पधारे हैं इस पर आप ने (पीर साहब) उसी का लिखा पत्र औरगंज़ेब को दिखाया जिसके अनुसार राजा आश्चर्य चकित हुआ। और सोच समझ से विनती की। महाराज आप शेर को वहाँ रख कर मेरी गद्दी पर विराजमान होकर कहें जो कुछ आपने कहना है। मैं शेर से डरता हूं। खैर आपने ऐसा ही किया और फारसी पद्यों में कहने लगे।

फारसी कविता में पीर साहिब का जवाब:-

कीसती बा सालिकाने राहि मैने दम जानी।
चीसत तदबीरे तु किया मद बरतु वक्ते जांकनी ।।
गरतुरा जोरे स्त दर बाजू बियाहम पंजह शैव।
व-नह अज़ सर पंजह शेरे अजल खुद रंजह शैव।।
चीस्त नैरोऐ तु खाही पीरपंडित पादशाह।
बादशाहे हरदु आलम खुद मनम बा मन तुरा।।

अर्थ :— कया तम्हें ईश्वर भक्तों के साथ छेडने की शक्ति है। इस समय तेरा अन्तिम समय आया है इसलिऐ बचने का

उपाय करो। यदी मुकाबला करने की शक्ति तो है इस सिंह रूपी मृत्यु से परख लो। इसी से तेरा अन्त होगा। हां अगर में बादशाह कहलाता हूँ इससे तेरा क्या मतलब है। फिर औरंगज़ेब ने उतर दिया।

औरगंज़ेब ने फारसी कविता मैं क्षिमा मांगी :—

ताज बखशी कुन शहा बर इँ गुलामे बद कमाश।
देह बराते जां बचंगम कुन दरंग अन्दर खराश ।।
बरसरे उँगश्त खुद अज नोकि कजलक ज़ंब दाद।
कत्रए खुनए चकीदो दरमदा औ दाद मदाद ।।
गुफतश आलमगीर ए मिहरे सिपहरे ए तिला।
बर खतायम खत कशकश बरसर बिनेह दस्ते अता ।।

है महाराज आप मुझ कुकर्मी, अर्धमी नोकर को जीवन दान देकर क्षमा करें। फिर राजा ने उगंली काट कर रक्त से नया आदेश लिखा जिसके अनुसार पिछला आदेश निर्रथक ठहराया गया और गलती के लिए क्षमा मागीं गई। साथ ही आपको (पीर साहब) पीर पडिंत पादशाहि हर दो जहां मुश्किल आसान की पदवं दी गई। दूसरा आदेश गवर्नर काशमार को भेजा गया जिस में उस-से गलत समाचार अथवा नाम भेजने के लिए फटकारा गया कि तुरन्त वह निशचित भेंट लेकर के आपके पास उपस्थित होकर क्षमा मांगे बादशाह औरंगज़ेब को आपका आत्मशक्ति देख कर आप पर श्रद्दा पैदा हुई इसलिए उसने आगे फिर सविनय प्राथना की कि आप अब मेरे (औरगंज़ेब) गुरू हैं। अत : मेरी एक और प्रार्थना स्वीकार कीजिए (वह यह है कि कुछ समय से मुझे (औरगंजब प्रत्यक खाध पर्दाथ मैं रक्त दिखाइ देता है। जिस कारण से मैं कुछ खा नहीं

सकता। और घूंगा होता जाता है। पाचन शक्ति भी अब कमज़ोर होती जा रही हैं। इस का कृपया इलाज बता दीजिए।

यह सुनकर आपने (पीर साहब) उत्तर दिया। कि यह सब सरमद नामक संत की निरापराध हत्या करने का फल है। खैर! अब से आप अपने हाथों की कमाई ही केवल खाने के प्रयोग में लायें और शासन में समद्रष्टि से काम करें। इन नियमों के पालने से अवश्य कुछ लाभ होगा। इस सम्बन्ध में आगे कुछ उपदेश भी दिया।

पीर साहिब का उत्र फारसी कविता में :—

जिश्त जेबा हर चि बीनी दस्त व रो बर वै मनेह।
एब सुनंतगर नुमाई गेबते सुनतगर अस्त।।
गर चिह मिलत मुखतलिफ शुद हेच कस महरूम नेस्त।
बागबांरा दर चमन हर गुल बरंगे दीगर अस्त।।

अर्थ-किसी की सुन्दंरता या बद सूरती पर ध्यान देना या आलोचना करना ईश्वरनिन्दा के समान है! ससांर में कई धर्म हैं! उसने किसी को निराश नही रखा हैं! अपितु वह सम दृष्टि रखता है।जिस प्रकार एक माली अपनी फुलवाडी में कई प्रकार केफुल उगाता है और पालता है। इसी प्रकार राजा भी एक माली के समान होता है।इसके उपरांन्त आप राजा के लिखे शब्द लेकर श्रीनगर लौट आए। दूसरे दिन सुबह पहले भेजे हुए सेवक फिर आये तो आपने उनको रक्त से लिखा हुआ दूसरा आदेश दिखाया यह देख कर वह चकित होकर भाग निकले। सैफखान गर्वनर कश्मीर भी यह चमत्कार देखकर लजित हुआ। कुछ दिनों केबाद औरगंजैब का भेज हुआ पत्र भी सैफखान को पहुंच गया। उसमें राजा ने लिखा था कि तुम जादूगर और संत में भेद नहीं कर सके। पीर साहिब हर दो जहां के मालिक है

वह अब मेरा भी गुरू हैं। मेरे ओर से स्वंय भेंट लेकर उनके पास उपस्थित हो जाओ। और साथ ही कुछ गांव उसको जागीर में दे कर उसकी प्रसन्नता प्राप्त करो।

आदेश अनुसार सैफखान स्वयम आपके पास भंट लेकर आया और कुलगाम की तरफ कुछ गांव जागीर में भी दिए सौफखांन के पत्र में राजा ने यह शब्द स्वंय फार्सी पद्यों में लिखे थे।

औरगंजेब का पत्र सेफ़खांन गवरनर के नाम :

फिउलहकीकत पीर पांडित पादशाहे मुलकि मास्त।
सालिकए सिलके खुदा व मालिक मुलके कजास्त।।
रौब ब खाके आसतानश जबह फरसा शाद बाश।
अज़ सजोदे दरगहश अज़ बन्दि गम आज़ाद बाश।।

अर्थ.—सचमुच पोर पडिंत पादशाह एक सच्चा और परम। ईशवर भक्त हैं। मेरे राजय पर क्या देवताओं पर उसका शासन है। इसके आश्रम पर जाकर भेंट दो। और चिन्ता की कडियों से स्वतन्त्रता पाकर उसकी प्रसन्नता प्राप्त करो।

इसके बाद सैफखांन ने गुप्रचहों द्वारा तथा आपके इशारों से सच्चे अथवा असली जादूगर का पता निकाला। उसको यह विश्वास हुआ कि आखूनशाह के सिवाय यहाँ और कोई नहीं है फिर सैफखांन ने लोहे का पिंजरा बनवा कर आखूशांह को बन्दी बना के देहल्ली राजा के पास भेजा। वहां उसको एक कठोर कारा गृह में बन्द रखा गया। इसी काराग्रह में कुछ समय के बाद उसकी मृत्यु होती है।

इसके समबन्ध में एक और विचार धारा भी है कि जब वह बन्दी बन कर देहल्ली पहुंचा तो एकबार प्यास के बाहाने से

एक माशकी से अपने उपर पानी डलवाया फिर वह अपने ज़ोरू के बल से पिंजरे से मुक्त होकर भाग निकला और फिर उसका कोई पता न चला।

मुस्लमान फकीर सरमद की कथा

ज़िल्ला आगरा में सरमद नाम का एक ईश्वर भक्त हो गुज़रा है। वह साधु और कवि भी था। एक दिन वह राजा के महल के रनवास की ओर से जा रहा था और फ़ारसी के यह शब्द कहता फिर रहा था।

चहार चीज़ अज़ गम दिल बुरदन्द कुदाम चहार।

अर्थ :— मन किन चार चीज़ों से खेंचा जाता है। राजा की लडकी जेबुलनिसा ने जब यह शब्द सुने तो उसने उत्तर इन शब्दों में दिया

जेबउनिसा ने उत्र दिया :—
शराब सबज़ह व अबिरवां व रोयनिगर ॥
शराब, हरा घास. बहता जल, प्रयमी का मुख राजा ने अपनी लड़की के शब्द सुने जिस पर राजा ने लडकी से पूछा कि तुम ने क्या कहा ? चूंकि वह एक अच्छी कवित्री थी उसने शब्दों में परिवर्तन करके तुरन्त उत्तर दिया

औरगंज़ेब के एतिराज़ पर जेबउनिसा ने यह कहा :
निमाज़ रोजह व तोबह व इसतिगफार ।
अर्थ १. निमाज़ २. रोज़ह ३. दोबारह न करना और ४. क्षिमा।

अब राजा ने सरमद कलन्दर को इस्लाम की नीति के विरुद्ध नंगा फिरते पर सूली पर चढाने की आज्ञा दी। सूली पर चढते समय सन्त सरमद ने यह कहा।

सरमद ने फाँसो के सम्य फारसी कविता में कहा।

एदोदह वरां अवल बिपोशेद। दर चारह कारि मन बिकोशेद। जानानि मरा बमन बियारेद। एँ मुर्दह तनम बदो सुपारेद। गर बोसह ज़नंद बदो लबानम। वर...... ज़िन्दह शवम अजब मदारेद। (यह मिसरा जामी शायर ने पूरा क्या है)

अर्थ :- ऐ नेत्रवान और बुद्धि—मान लोगो। मेरे कार्य में यह प्रयत्न अवश्य करें। कि इस मृतक शरीर को फिर मेरी पेमिका को सौंप दिया जाए। और यदि वह मेरे होठों को चूमेगी तो मुझे पुन: जीवन प्राप्त होने में कोइ आश्चर्य नही हैं इसके अपरान्त मन्त्रियों और सभासदों ने राजा को इस बात की पडताल करने का परामश दिया। औरगंज़ेब राजा ने परामर्श स्वीकार करके अपनी लडकी को सरमद के होंठ चूमने की आज्ञा दी। परिणाम स्वरुप लड़की के चूमने के तुरन्त बाद सरमद पुन: जीवित हुआ। यह देख कर सभी दर्शक विस्मित हुए। अब से फिर सरमद मस्ताना ढंग से घूमता रहा और यह शब्द कहता रहता था।

फारसी कविता में सरमद ने कहा।

आंकस कि तुरा ताज शाहन शाही दाद। मारा हमहा असबाबि परैशानी दाद। पूशीदह लिबास हर किरा ऐबअस्त। बे एबां रा लि बासि उरयां दाद॥

अर्थ :— जिस ईश्वर ने तुझे सिंहासन और शासन दिया उसी ने मुझे आवारगी के साधन दिये। उसी ने दोषी के लिये पोशाक बनाया दोषरहित को नंगा फिरना बता दिया।

राजा बार बार यह सुनकर क्रोधित हुआ और अपने मन्त्रियों की फिरएक बैठक बुलाई। नंगा फिरना इस्लामी नीति

के विरुद होने के कारण उसे फिरसूली पर चढाना बैठक में निशचित पाया गया और सरमद को फिर फांसी दी गई। दुसरी बार फांसी के वक्त सरमद ने कहा।

बि बराए बादि सबा पैयामे । सरि मन फितादह ग़िरयों।।
कि शाह दर मुलकि दौलत। मन मुलकि वेनवाई।।

अर्थ :— ऐ वायु के देवता। परमात्मा तक यह समाचार पहुंचा दे कि मेरा गिरा हुआ सिर रो रहा है जब कि राजा धन के देश में डूबा हुआ है। मैं शीष रहित वैरान देश में घूम रहा हूं।

बगदाद के कई सूफियों का आपके दर्शन को आना

कुछ समय के वाद बगदाद के कुछ सूफी औरगंज़ेब के दरबार में आये। वहां कुछ दिन बिता के वे राजा के कहने पर कशमीर का भ्रमण करने के लिये यहां भी आ गए। राजा ने उनको कशमीर में आप से मिलने के लिये भी कहा था इस प्रकार कशमीर में आकर सूफी एक दिन आपके पास भी दशर्नों के लिऐ आए। काफी देर आप से बात चीत करते रहे। इतने में सूफियों को निमाज़ का समय आया तो वे आपको कुटिया में प्रविष्ट कर निमाज़ पढ़ने लगे। निमाज़ आरम्भ करते ही वहां विषैली मखियां पैदा हो गई और उन्होंने बुरी तरह काटना आरम्भ किया- निमाज़ पढना तो दूर रहा वे उसी समय भागने लगे। कुटिया से निकल कर आपके चरणों पर शीष झुकाया। कुछ वाद-विवाद के बाद आपने उनसे कहा कि यह संतों का गृह है ईश्वर का नहीं। इन दोनों में अन्तर है और आप लोग शौच रहित ही देख पडते हैं। इसी कारण

से मखियां दण्ड देने के अभिप्राय से आईं होंगी। आप लोग जाहिद (धर्मात्मा) और सन्त में भेद नही कर सके

यह चमत्कार देखकर वे लज्जित हुए और कुछ दिनों के बाद दिल्ली लौटे। वहां पहुँच कर राजा को यह सारी कथा सुनाई। राजा तो स्वंय पहिले ही प्रभावित हो चुका था अब उनकी अपनी धार्मिकता का भांडा ही फूट गया और घमण्ड भी छूट गया। आखिर में जब सूफी लोग अपने देश को लौट गए तो उन्होंने वहां भी आप की आत्मशक्ति की काफी प्रशंसा की।

एक तरखान के बेटे को "जीवन दान देना"

एक दिन आपके सेवकों ने आपकी कुटिया की मर्मत कराने के लिऐ एक तरखान को काम पर लगाया। काम में हाथ बटाने के लिये तरखान अपने लडके को भी साथ ले आया था। मर्मत का काम चल रहा था इसी के बीच तरखान का लडका गिर कर मर गया बहुत से मुस्लमान इकत्रित हुए और शोर मचाने लगे। कुछ धार्मिक वैर भाव रखने वाले मुस्लमानों ने आपको ही दोषी ठहराने का प्रयत्न किया परन्तु तरखान और उस की पत्नी ज़ार ज़ार रोने लगी। इसपर आपको दया आगई। और आपने कहा कि शायद उसे बेहोशी छा गई हो। मरा नही होगा थोड़ी गर्म चाय पिलाकर उसे आवाज़ मारो तो सही। फिर ऐसा ही किया गया और वह जीवित हुआ। उसके माता पिता अत्यन्त प्रसन्न हुऐ। उन्होंने उन लोगों की भी बुराई की जिन्होंने आप पर शंका प्रकट की थी। इस घटना से आपकी ख्याति में और वृध्दि हुई।

"एक मुस्लमान स्त्री को पुत्र का वरदान"

एक मुस्लमान औरत कई वर्षों से बांझ हो चुकी थी उसे इस कारण काफी निराशा हुई थी। मनोरथ सिद्द करने के लिये वह कई संतों और फकीरों के पास भी जा चुकी थी। परन्तु कुछ प्राप्त न कर पाई। अन्त में जब उस ने आपकी बड़ाई भी सुन ली तो एक दिन आपके-शरण आई। काफी विनती और प्रर्थना की आपने उसे चिलम में आग रखने का सकेंत किया। आज्ञा पालते पालते इस स्त्री की एक ऊंगली जल गई। किन्तु उसने लज्जा के कारण उफ तक न किया उपितु काफी धीरज से काम लिया। जब आपने यह सब देखा तो आप बडे प्रसन्न हुऐ, और स्त्री पर दया करके पुत्रवटी होने का वरदान दिया। सन्तान प्राप्त होने पर वह काफी हर्षित हो जाती है और फिर आपकी सेवक भी बनगई।

नानशाह सेवक के माता का देहान्त और उसे फिर जीवनदान देना

कुछ समय के बाद आपके सेवक नानशाह की माता की मृत्यु हुई। कि उसके घर में लंगर चलाने के लिये और कोई भी न था। और साथ ही नानशाह को आप पर द्रिढ विश्वास था। वह तुरन्त ही आपकी शरन में आया और सेवा भाव में सब हाल सुनाया उसकी प्रार्थना पर आप ने उत्तर दिया कि अपने समय पर मृत्यु होना अटल है। इस पर विलाप करना व्यर्थ है। परन्तु ईस उत्तर के मिलने पर भी नानशाह अपनी विनती पर स्थिर रहा अन्त में आपको दया आई। और कहा अच्छा तुम अपनी आयु में किनने वर्ष

घटाना चाहते हो उतने ही वर्ष आपकी माता फिर जीवित रह सकती हैं। नानशाह ने तुरन्त उत्तर दिया चौदाह वर्ष फिर आप ने कहा कि घर जाकर इतने ही सिंगाडे माता के शीष से छू कर उनकी गिरियां खा जाओ फिर सेवक ने ऐसा ही किया। आप फिर स्वयं कुछ देर के लिये मौन हुए। कुछ मिनटों में उसकी माता उठ खडी हुई। नानशाह और दूसरे लोग यह देख कर चकित रह गए और प्रसन्न हुए। जनता में विशेषकर सेवकों में आपका प्रेम और विश्वास बढने लगा।

त्रिसन्ध्या का स्नान

एक दिन आपके सेवकों ने त्रिसन्ध्या जाने की इच्छा प्रकट की विशेषकर उस समय जबकि दर्शन के दिन बीत चुके थे। आपने सेवकों की प्रार्थना स्वीकर की और निश्चित समय पर चल पडे। जब रास्ते में आप सेवकों के साथ जा रहे थे। तो कुछ नटखट और उपद्रवी मुस्लमानों ने आपके चलने में रोड़े अटकाने का प्रयत्न किया। उनकी इस दुष्टता पर आपने रुष्ट होकर उनपर एसी दृष्ट डाली कि वे सभी अकड के रह गये। आप स्वयं सेवकों सहित आगे बढ़ते गये।

दूसरे दिन त्रिसन्ध्या पहुचँकर वहां डेरा जमाया। दर्शन का समय बीत चुका था। चश्मा कई दिनों से सूखा पडाथा। इसलिए सेवकों में कुछ निराशा छा गई। इसपर आपने उन से कहा कि मेरी लाठी (डंडा) चश्मे के भीतर घुमाऊ और यह दोहा पढ लो।

आपने फारसी कविता में यह शब्द कहे।

चि कुदरत सुन्दह ब्रारी राह न्यायद
ब इस तिक बालि शाहन शाहि रेशी

यह शब्द कागज पर लिख दिये और चश्मे में डालने की आज्ञा दी सेवकों ने एसा ही किया और चशमे से पानी बहने लगा। आपके सिवाय सभी सेवकों ने स्नान किया। स्नान करके फिर आपसे भी स्नान करने की प्रार्थना की। किन्तु आपने उत्तर दिया कि त्रिसन्ध्या के दरशन मेरे बुलाने पर हुये हैं। अत: मेरा स्नान करना उचित नहीं है। इसके बाद आप आश्रम की और लौट पडे। रास्ते में वह नटखट मुस्लमान शरीर से उसी तरह अकडे पडे थे। सेवकों ने यह देख कर आपसे उन पर दया करने की प्राधंना की। आपने विनती स्वीकार की और उनपर फिर दृष्टि ड़ाली। जिस से वे सभी ठीक हुए, और आपके चरनों पर गिर पडे। इस घटना के बाद वे सब ईश्वर भक्ति करने लगे।

एक मुस्लमान स्त्री के घर निमन्त्रन

कश्मीर के सभी मुस्लमानों तथा हिन्दओं को आप पर विश्वास और श्रद्दा उत्पन्न हुई थी। उसे प्रकट करने के लिए एक मुस्लमान स्त्री भी आप के सेवा में आई एक दिन उसने आपको अपने घर निमंत्रित किया। आपने यह निमन्त्रन स्वीकार कर लिया जब आप वहाँ गए तो एक ब्राहमन देवता भी आपके साथ वहां चले। [जब भोजन का कुछ भाग आप खा बैठे तो आपके साथ आये हुये ब्राहमन से प्रश्न किया कि हे ब्राहमन देवता आपने एक मुस्लमाब के घरभोजन कैसे स्वीकार किया। ब्राह्मन ने तुरन्त यह उत्तर दिया कि जब आप जैसे इतने बडे संत खाना खाने बैठे तो मेरा क्या दोष। आपने कहा कि

यह सब शक्ति की बात है। वैसे तो मैं सभ पेट साफ कर सकता हूं। आपने फिर अपनी अध्यात्मिक शक्ति के बल से शरीर के आन्तरिक अंग बाहर निकाल कर साफ करके दिखाये। आपकी यह आत्मशक्ति देखकर ब्राहमन बडा लज्जित हुआ। उसकी फिर शुद्धी कराई गई और उसे आगे अपने धर्मपर रहने का उपदेश दिया गया।

"ज़हूरदीन देदमरी पर कृपा"

ज़हूरदीन नामक एक दुकानदार नवा कदल में रहता था। यह आपका सच्चा सेवक भी था। एक बार माल से भरी नौका ले कर चल रहा था तो सफाह कदल के निकट ऐसे ज़ोर की आंधी आई और नौका उलट कर सारा माल नदी में डुब गया। यह देखकर ज़हूरदीन पीटता २ आप की शरण में आया। और इस प्रकार विनती करने लगा कि यह भला कैसे आगई जब कि आपका नाम मुश्किल आसान है। आपने मुस्कराते हुए उत्तर दिया कि घबराऊ नही पहिले तो तुम फिर किशती देखकर आआ। और देखलो कि आपके कहने में कितनी सच्चाई है। तदानुसार ज़हूरदीन चला गया और नदी के निकट पहुँच कर नाव को फिर ठीक हालत में देख पाया। वह फूले न समाया और हर्षीत हो कर घर चला गया।

"कशमीर के मंदल वंश के एक व्यकति क जीनव दान देना"

खरयार श्रीनगर में मन्दलो वंश का एक मनुष्य आपका सेवक हो गुज़रा है। कहा जाता है कि वह धनाढय मनुष्य था। उन दिनों ही देश में अकाल पडा था। हर एक अपनी २ जगह पर अतयन्त चिन्न्तिंत था। ऐसे वातावरण में यह

स्वाभाविक ही है कि ऐसे समय में दैवी प्रकोप भी हुआ करते हैं और लोगों के मन में भी बुरे विचार और स्वपन आते हैं।

इन दिनों ही इस मन्दलों नामक धनाढय को भी अर्धस्वपनावस्था में कोई भयानक मूर्ति प्रकट हुई और उसे घसीटने लगा। किन्तु निश्चित तुथ्य है कि ईश्वर भक्तों अथवा संत सेवकों पर इन घटनाओं का कोई प्रभाव नही पडता है अत : मन्दलों ने आप का शुभ नाम स्मरण किया आपका नाम लेकर ही तुंरत उस नें आपको सिहांसन पर बिराजमान पाया। फिर आपसे इस प्रकार प्रार्थना की कि ऐ बादशाह हर दो जहां मैं इस भयानक अजदहा जैसे देवके हाथों में फंस कर पीडित हूँ इसलिये मेरी रक्षा करो। यह सुन कर आपने अपने सेवक नानकशाह को इस बात की खोज करने की आज्ञा दी।

आदेशानुसार नानकशाह ने दोनों (देव और सेवक) को पकड कर आपके सामने उपस्थित किये आपने देव से प्रश्न किया कि तुम मेरे सेवक के साथ इस प्रकार क्यों छेड़ते हो। क्या तुमहें अपना जीवन प्यारा नही है? देव आपको देखकर एक दम भाग गया और मन्दलू नामी भी पीडा से छूट गया। इसी दिन से फिर कहत भी समाप्त हुआ दूसरे दिन मन्दलू भेंट लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और आप की कृपा पर धन्यवाद प्रकट किया। यूँ तो आपके चम्तक़ार अनगणित हैं। किन्तु आजकल की महंगाई और समय की कमी के कारण सभी बातें विस्तारसे लिखने में असमर्थ हैं।

"आपका अन्तरध्यान"

च्यूंकि आपकी अध्यतिमक शक्ति पराकाष्टा पहुँच चुकी थी

और दूरदर्शक भी आप काफी थे। इसलिये अपने अन्तरध्यान होने की चतावनी आपने सभी सेवकों को कुछ दिन पहले ही फारसी कविता शब्दों में दी।

आपने फारसी कविता में यह सुनाया :—

रंजु व राहत चूं गुले रैणा व ज़ेबा दर नज़र।
दर गुलिसतां ने जहां आमद बचशमे हर बशर।
हर कि आमद दर जहां रफत अज़ जहां हम चू हुबाब जिन्दगानी अज़ हुबाब आमोखतह बावे शबाब ॥

अर्थ संसार में प्रत्येक का जीवत जलके बुल बुले अथवा ताज पुष्प के समान है। संसार के सुख और दुख: भी इसी फूल की तरह हैं। जो कि तुरन्त ही मुरझा जाता है। इसी प्रकार मनुष्य का जन्म और मृत्यु एक अनिवार कार्न है। इस कारण से शरीर पर शूख करना बुद्धिमानी से बाहिर है। इसलिये हर आदमी को चाहिये कि वह अपना धर्म और कर्तव्य पहचान ले। लोक सेवा अपना सच्चा धर्म समझ कर करता रहे। श्री भगवत गीता में भी यही कहा गया है। गीता पर्मान उर्द में :—

जो कोई आया जहां में उसका फनाह है लाज़िमी।
इस हुबाबे जिन्दगी पर फिकिर करते हैं गवी ॥
अपने फरज़ेमन्सभी को दिलसे तू अंजाम दे ॥
खिदमते खलके खुदा को सच्चा आदेश मान ले ॥ लेखक

अर्थ: आपने कई ढंग से अपने सेवकों को ढारस बन्धाया और अन्त में अपने जन्म दिन पर साठ ६० वर्ष की आयु में सेंकड़ू सेवकों से विदा हुए लेखक ने इस सम्बन्ध में यह शब्द कहे है।

यह शव्द कागज पर लिख दिये और चश्मे में डालने की आज्ञा दी सेवकों ने एसा ही किया और चशमे से पानी बहने लगा। आपके सिवाय सभी सेवकों ने स्नान किया। स्नान करके फिर आपसे भी स्नान करने की प्रार्थना की। किन्तु आपने उत्तर दिया कि त्रिसन्ध्या के दरशन मेरे बुलाने पर हुये हैं। अत: मेरा स्नान करना उचित नहीं है। इसके बाद आप आश्रम की ओर लौट पडे। रास्ते में वह नटखट मुस्लमान शरीर से उसी तरह अकडे पडे थे। सेवकों ने यह देख कर आपसे उन पर दया करने की प्रार्धना की। आपने विनती स्वीकार की और उनपर फिर दृष्टि ड़ाली। जिस से वे सभी ठीक हुए, और आपके चरनों पर गिर पडे। इस घटना के बाद वे सब ईश्वर भक्ति करने लगे।

एक मुस्लमान स्त्री के घर निमन्त्रन

कश्मीर के सभी मुस्लमानों तथा हिन्दुओं को आप पर विश्वास और श्रद्दा उत्पन्न हुई थी। उसे प्रकट करने के लिए एक मुस्लमान स्त्री भी आप के सेवा में आई एक दिन उसने आपकों अपने घर निमंत्रित किया। आपने यह निमन्त्रन स्वीकार कर लिया जब आप वहाँ गए तो एक ब्राहमन देवता भी आपके साथ वहां चले। [जब भोजन का कुछ भाग आप खा बैठे तो आपके साथ आये हुये ब्राहमन से प्रश्न किया कि हे ब्राहमन देवता आपने एक मुस्लमाब के घरभोजन कैसे स्वीकार किया। ब्राह्मन ने तुरन्त यह उत्तर दिया कि जब आप जैसे इतने बडे संत खाना खाने बैठे तो मेरा क्या दोष। आपने कहा कि